

## Result Mitra Daily Magazine

### कैसे कोविंग हब बना मुख्यी नगर



#### हालिया संदर्भ :

- सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में दिल्ली के ओल्ड राजेन्द्र नगर में RAU IAS स्टडी सर्किल के बेसमेंट में 27 जुलाई को बाढ़ के कारण तीन सिविल सेवा उम्मीदवारों की मौत के मामले पर स्वतः संज्ञान लिया।
- SC ने कोविंग सेंटर फेडरेशन की तरफ से आग और सुरक्षा मानदंडों संबंधी याचिका खारिज करते हुए कहा कि 'आप युवा उम्मीदवारों के जीवन को दयनीय बना रहे हैं'।
- SC ने कहा कि युवा अपने लेकर यहाँ आते हैं और वे कड़ी मेहनत करते हैं लेकिन कोविंग उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करती है।
- खंडपीठ में शामिल जस्टिस कांत ले कहा कि कोविंग संस्थान मौत के कमरे बन गए हैं।

#### मामला :

- जस्टिस कांत एवं उज्जवल भुइयां की पीठ कोविंग फेडरेशन की अपील पर सुनवाई कर रही थी।
- दरअसल 14 दिसम्बर 2023 को दिल्ली उच्च न्यायालय ने कोविंग फेडरेशन द्वारा उठाए गए सार्वजनिक सुरक्षा मानदंडों को विफल बताया था, जिसे फेडरेशन ने SC में चुनौती दी थी।

- खंडपीठ ने कहा कि “हमें यकीन नहीं है कि इस संबंध में दिल्ली के NCT या भारत सरकार के आवास एवं शहरी मंत्रालय द्वारा अब तक कौन से सुरक्षात्मक कदम उठाए गए”।
- SC ने नोटिस जारी करते हुए सुरक्षा के लिए अपनाए गए मानकों को बताने का निर्देश दिया, साथ ही यह भी पूछा कि इस सुरक्षा मानकों के अनुपालन के लिए किस प्रकार की व्यवस्था अपनाई गई है।
- उच्च न्यायालय के फैसले ने कोविंग सेंटरों को शैक्षणिक संस्थानों के बराबर ला दिया एवं उनसे भवन उपनियम तथा अग्नि एवं अन्य सुरक्षा मानकों को पालन करने के लिए कहा गया।
- चूंकि दिल्ली-NCR का एक बड़ा हिस्सा UP एवं हरियाणा राज्यों से आता है, इसलिए न्यायालय ने इन दोनों राज्यों के संबंधित शहरी विकास विभाग के प्रमुख सचिव को मामले में पक्षकार बनाए जाने का निर्देश दिया।

### ✚ लुभावने सपने :

- मुखर्जी नगर एवं ओल्ड राजेन्द्र नगर में हजारों कोविंग सेंटर हजारों युवाओं के महत्वाकांक्षा एवं उम्मीद के प्रतीक बन गए हैं।
- सैकड़ों विज्ञापन छात्रों को यह सपना दिखाते हैं कि उनकी आकांक्षाएं उनकी पहुँच में हैं, जिससे वे (कोविंग) उनकी सहभागी बनेंगे।

### ✚ ओल्ड राजेन्द्र नगर VS मुखर्जी नगर :

- ओल्ड राजेन्द्र नगर में ऊँचे-ऊँचे कोविंग संस्थान हैं, जो मुख्यतः IAS-IPS के लिए हैं।
- यहाँ लगे विज्ञापनों के द्वारा कोविंग देश के कठिन परीक्षाओं में से एक को सफलतापूर्वक पास कराने का मार्ग बताते हैं, साथ ही बड़े-बड़े होर्डिंग में सफल उम्मीदवारों एवं उनके गुरुओं के चेहरे छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं।
- वहीं मुखर्जी नगर में छोटे एवं कॉरपोरेट शैली के कोविंग सेंटर का मिश्रण है।
- यहाँ IAS-IPS से लेकर SSC एवं बैंकिंग जैसी सेवाओं के लिए कोविंग प्रदान की जाती है।
- ओल्ड राजेन्द्र नगर में मुख्यतः अंग्रेजी माध्यम वाले कोविंग संस्थान हैं, जबकि मुखर्जी नगर में हिन्दी माध्यम कोविंग का वर्चस्व है।
- क्षेत्र के 1000 कोविंग सेंटर में से 200 प्रमुख कोविंग सेंटर ओल्ड राजेन्द्र नगर में हैं।

### ✚ ऐतिहासिक दौर :

- UPSC की आकांक्षाओं का पर्याय करने से पूर्व ओल्ड राजेन्द्र नगर एवं मुखर्जी नगर सहित आस-पास का क्षेत्र आजादी के बाद पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) से विस्थापित लोगों की शरणार्थी के रूप में प्रसिद्ध था।

- शुरू में विस्थापित लोगों को किंगस्वे कैंप, GTB नगर, ओल्ड राजेन्द्र नगर, वेस्ट पटेल नगर, मोतीनगर, राजौरी गार्डन जैसे क्षेत्रों में अस्थायी तौर पर आवास आवंटित किए गए।
- विभाजन के बाद इस क्षेत्र में लगभग 5 लाख विस्थापित शरणार्थी आए, जिसके लिए सरकार को 1948 में राहत एवं पुनर्वास नीति बनानी पड़ी।
- पुनर्वास में मुख्यतः आवास एवं शिक्षा पर ध्यान दिया गया ताकि शरणार्थियों को आत्मनिर्भर बनाया जा सके।
- तत्कालीन केन्द्रीय पुनर्वास मंत्री मोहन लाल सक्सेना ने बताया था कि सरकार ने शरणार्थियों के लिए 2958 एकड़ भूमि आवंटित की थी।
- इसके अलावा सरकार ने शादीपुर, मलकागंज, GTB नगर, जंगपुरा, निजामुद्दीन, रेघरपुरा एवं ओल्ड राजेन्द्र नगर जैसे क्षेत्रों में स्वतंत्र टाउनशिप में नवनिर्मित घर शरणार्थियों को दिए।
- BJP के नेता एवं ओल्ड राजेन्द्र नगर के पूर्व पार्षद राजेश भाटिया ने कहा कि उनका परिवार सियालकोट से यहाँ विस्थापित हुआ था, हालांकि उस समय यह क्षेत्र जंगलों से ढंका था।

#### **नवनिर्माण :**

- ओल्ड राजेन्द्र नगर, खामपुर राया और शादीपुर गांवों पर निर्मित हुआ, जिसकी उत्पत्ति लगभग 1000 ईसवी पूर्व में हुई थी।
- दिल्ली स्थित एक गैर-लाभकारी संस्था के मुताबिक अरावली पर्वतमाला की शुरुआत इसी क्षेत्र से हुई थी, जिसके कारण पूर्व में यह खनन गतिविधियों का केन्द्र बना रहा।
- 1911 में जब हर्बर्ट बेकर एवं लुटियंस ने दिल्ली का नव निर्माण प्रारंभ किया तब सभी लाल बलुआ पत्थर इसी क्षेत्र से मंगवाए गए थे।
- मुखर्जी नगर क्षेत्र को ही अंग्रेजों ने दिल्ली की स्थापना के लिए चुना था, लेकिन यमुना के किनारे होने के कारण बाढ़ की संभावित खतरों ने उन्हें यह प्लान बदलने पर मजबूर कर दिया।
- इसी क्षेत्र में ढाका गांव भी था, जो विशेष उपजाऊ नहीं था, लेकिन वन्यजीवों के मामले में यह काफी समृद्ध था।
- यहां तेंदुए की बड़ी आबादी पाई जाती थी।
- 1911-1947 के बीच क्षेत्र के गांव, शहर में बदल गए क्योंकि ब्रिटिश ने छावनी निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर भूमि का अधिग्रहण किया।

#### **किराये का प्रचलन :**

- शरणार्थियों में सभी को एकसमान आवास एवं भूमि आवंटित नहीं किया गया था।
- निजामुद्दीन वाले क्षेत्र में शरणार्थियों को बड़े प्लॉट मिले, जबकि ओल्ड राजेन्द्र नगर वाले क्षेत्र में छोटे प्लॉट आवंटित किए गए।

- आजादी के पहले दशक तक भूमि एवं आवास आवंटित की जाती रही, जिससे धीरे-धीरे क्षेत्र में भीड़ बढ़ती गई।
- धीरे-धीरे लोग किराये पर मकान देने लगे, जिससे प्राप्त आय एक महत्वपूर्ण आय-स्रोत बन गई।
- शुरुआती समय में लोगों ने परिवारों (Family type) को किराए पर रखा, लेकिन जल्द ही कड़े कानूनी मामले सामने आए, जिसमें परिवारों ने मकान खाली करने से मना कर दिया।
- परिणामस्वरूप निवासियों ने डॉक्टरों, अधिकारियों व अन्य सरकारी-कर्मियों को घर किराये पर देना शुरू कर दिया क्योंकि इनका स्थानांतरण होने पर घर छोड़ना निश्चित था।
- बीतते समय के साथ PG (Paying Guest) व्यवसाय क्षेत्र के लिए वरदान बनकर आया, क्योंकि छात्र सामान्यतः 1-2 वर्ष में चले जाते हैं।
- क्षेत्र में कई वरिष्ठ नागरिक इसी पर निर्भर हैं, जो 10-12 फीट के कमरे के लिए 10-15000 महीना लेते हैं।

### **✚ कोचिंग हब ने बदला परिदृश्य :**

- कोचिंग हब के कारण कई क्षेत्रों में आवासीय घर नहीं मिलते क्योंकि छात्रों की संख्या अधिक होने से सारे घर किराये पर दिये जा चुके हैं।
- “दिल्ली-2021” के मास्टर प्लान ने कोचिंग सेंटर को विकसित होने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- 1976 में ओल्ड राजेन्द्र नगर में केवल वाजीराम IAS और रवि IAS कोचिंग सेंटर की थे, लेकिन धीरे-धीरे विजन Next IAS, श्रीराम IAS आदि महत्वपूर्ण संस्थान खुले।
- 1953 में स्थापित RAU IAS का IAS स्टडी सर्किल दिल्ली के पहले कोचिंग सेंटरों में से था, जिसका कार्यालय बाराखंभा रोड पर था।
- 1990 के दशक के बाद इन क्षेत्रों में कोचिंग सेंटरों एवं छात्रों की संख्या में भारी वृद्धि हुई।
- 2000 के दशक में छात्रों की संख्या और बढ़ गई और Youtube की लोकप्रियता के बाद कोचिंग सेंटरों में भीड़ भी बढ़ी क्योंकि शिक्षक Youtube के जरिए सुदूर क्षेत्रों में भी लोकप्रिय हो गए।
- कई उम्मीदवार जो मेन्स में सफलता पा लेने के बाद अंतिम रूप से चयनित नहीं हो पाते, वे कोचिंग को पूर्णकालिक करियर बना लेते हैं, जिससे कोचिंग की संख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है।
- DU (दिल्ली यूनिवर्सिटी) से निकटता एवं DU क्षेत्र में मुखर्जी नगर क्षेत्र का किफायती होना भी क्षेत्र के कोचिंग हब में परिवर्तन के लिए मददगार था।

### **✚ Basement क्यों ?**

- कई कोचिंग सेंटर अपने स्वीकृत प्लोर रेशियो (FAR) से ज्यादा संरचनाएं संचालित कर रहे हैं।
- रीडिंग रूम के लिए बेसमेंट 40000-50000 रूपए में किराया पर मिल जाता है, जबकि अलग-अलग मंजिलों के लिए यह किराया 1.25 लाख रूपए है।

- कई इमारतों के बुनियादी ढाँचें एवं लॉजिस्टिक्स को अपडेट नहीं किया गया है।
- कोविंग सेंटर के विकास को इस संदर्भ में भी देखा जा सकता है कि सिर्फ 5 वर्षों में कोविंग सेंटरों से GST संग्रह 2240 करोड़ रूपए से बढ़कर 5517 करोड़ रूपए हो गया।

### अन्य मुद्दे :

- छात्रों द्वारा किराए पर लिये जाने वाले कमरों की कीमत 15-20,000 रूपए होती है, साथ ही कोविंग फीस 1 लाख-2.5 लाख तक होती है, लेकिन उन्हें स्वास्थ्यवर्धक खाना, स्वच्छ कमरे आदि के लिए वंचित होना पड़ता है।
- छात्रों की मौजूदगी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के लिए वरदान है, लेकिन स्थानीय निवासियों के साथ उनके रिश्ते तनावपूर्ण रहते हैं।
- 24x7 रीडिंग व्यवस्था के कारण छात्र देर रात बाहर सड़कों पर घूमते हैं तथा मौज-मस्ती करते देखे जाते हैं, जो स्थानीय लोगों के लिए परेशानी का कारण बनते हैं।

  
**Result Mitra**